क्या विश्वविद्यालय प्रशासक नींद से जागेंगे ?

विश्वविद्यालय केवल ईंट, चूना गारे से बना हुआ भवन मात्र नहीं होता। यह नयी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास और साथ ही पूरे समाज को उन्नत बनाने एवं सुसंस्कारित करने का एक केन्द्र भी होता है। इसको सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी विश्वविद्यालय प्रशासन की होती है। लेकिन कुमायूँ विश्वविद्यालय का प्रशासन अपनी इस जिम्मेदारी से पूरी तरह आँखें मूँदे हुए हैं। यह कुछ विशेष लोगों के हाथ की कठपुतली मात्र बनकर रह गया है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की प्रवेश नीति के कारण आर्थिक रूप से कमज़ोर छात्र प्रवेश से वंचित हो गये। दूर-देहात से आये छात्र निराश होकर लौट गये। उन्हें मजबूरन अन्य महाविद्यालयों में प्रवेश लेना पड़ा। बहुतेरे तो वहाँ भी प्रवेश नहीं ले सके।

इस प्रकार विश्वविद्यालय की परीक्षा व्यवस्था भी छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करती है। सत्र नियमन के लिए शीघ्र परीक्षाफल निकालने की आपाधापी में मूल्यांकन का काम औपचारिकता मात्र बनकर रह गया। छात्रों के परिश्रम, उनके अध्ययन के स्तर का सही मूल्यांकन न होने से अनेक छात्रों का भविष्य अन्धकारमय हो गया है।

निम्नलिखित पद्यांश के जरिये मैं कुमायूँ विश्वविद्यालय प्रशासन को सम्बोधित करना चाहता हूँ–

"तुम सोचते होगे
वह तो सहने के लिए ही बना है
बेजान है, उसकी रगों में खून नहीं है
लेकिन याद रखो–
अन्याय और यातना की सीमा
जब पार हो जाती है
तो बेजान में ही सबसे पहले
जान आती है"

अन्त में युवा साथियों को आह्वान–

न अपने आप बदलती है,
न अपने आप बदलेगी
उठ, इस दुनिया को बदल दे,
अब सोचने का समय कहाँ

गोपेश चन्दोला
डी.एस.बी.परिसर
कु.वि.वि.,नैनीताल

भाषा-शैली सरल बनाएं

'आह्वान' के सभी साथियों को प्यार भरा नमस्कार ! विगत अंक 1 दिसम्बर '98–28 फरवरी '99 मिला। शुक्रिया। अंक मिलते ही पूरा पढ़ गया, फिर आपको लिखने बैठा। हमेशा की तरह आपने अपनी कलम से सच्चाइयों का पर्दाफाश किया है। अंक की कंपोजिंग व छपाई निर्दोष है, परन्तु भाषा-शैली थोड़ी कठिन लगती है। अगर उसे भी थोड़ी सरल बनायें तो हमारे जैसे कम पढ़े-लिखे पाठकों को बात ज्यादा अच्छे ढंग से समझ में आयेगी।

दूसरी बात यह है कि हम पिछले कई अंकों से देख रहे हैं कि 'आह्वान' है तो पाक्षिक परन्तु लगता है कि आर्थिक एवं रचनात्मक सहयोग न मिल पाने के कारण तीन-तीन महीने के संयुक्तांक निकालने पड़ रहे हैं। क्यों न इसे त्रैमासिक का ही रूप दे दिया जाये। इससे सदस्यता शुल्क भी कम हो जायेगा और सभी पाठकों को सुविधा होगी।

राजकुमार गुप्ता
नासिक रोड जेल
नासिक

आह्वान कार्यालय पर छापा और तलाशी की निन्दा

देश गुण्डा तंत्र में तब्दील

'आह्वान' कार्यालय और नारी सभा की संयोजिका सुश्री मीनाक्षी के आवास पर आधी रात को सादी वर्दीधारी पुलिस का छापा एवं तलाशी इस पचास साल के "समाजवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था" पर सरकारी आतंकवादी गुण्डों के कब्जे की सूचक है। इस देश के लिए एक गंभीर चुनौती है। इस देश की व्यवस्था निरंकुश फासिस्ट शक्तियों के हाथों दिन-ब-दिन खूंखार होती जा रही है। इस देश के लोकतंत्र में 'लोक' तो कभी रहा ही नहीं है, और अब 'लोक' की जगह 'गुण्डा' लेकर इस देश को गुण्डातंत्र में तब्दील कर दिया है।

हमें आज इस देश के रोज नये-नये रूप में पैदा होते सफेदपोश एवं सरकारी आतंकवादियों से बचाने हेतु अपनी संकल्परत लहराती मुट्ठियों के सैलाब को इन्कलाब में बदलना होगा। अन्यथा आने वाली संतति और शहीदों का बहा रक्त हमें कभी माफ नहीं करेगा।

डॉ० गिरिजा शंकर मोदी
सं०-'आज की कविताएं'
बांका, (बिहार)

(ये दोनों पत्र हमें बाद में मिले थे, इसलिए 'आह्वान' के विगत अंक में प्रकाशित नहीं हो पाये थे- **सम्पादक**)

हम आपके साथ हैं

"आह्वान" कार्यालय पर छापा तथा साथियों के साथ की गई बदसलूकी की भर्त्सना हमलोगों ने भी की थी। बैठक मेरे शिवाजी कॉलोनी स्थित निवास पर हुयी थी। मेरे अलावा नीरद जनवेणु, बच्चा यादव, शिखा बर्मन तथा सुरेन्द्र शोषण उपस्थित थे। अन्य हस्ताक्षरी थे-नूतन आनंद, कलाधर देवानंद तथा जयप्रकाश नायक आदि। कुछ आकस्मिक व्यस्ताओं के कारण मैं इसकी सूचना आपको नहीं दे पाया था। हम सभी आपके साथ हैं।

शंभु कुशाग्र
पूर्णियां, बिहार

बिना छानबीन के खबरें न छापें

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' का नया अंक पढ़ा। उसमें छात्रों पर पुलिसिया कहर पर जो 'न्यूज' दी गई है, काफी त्रुटिपूर्ण है। हल्द्वानी वाले मामले पर लिखा है कि 'परिवर्तनकामी छात्र संगठन' और 'आइसा' के सदस्यों पर लाठी चार्ज किया गया। आपने बुर्जुआ अखबारों से खबर पढ़कर बिना छानबीन किये उसको छाप दिया। यह प्रगतिशील पत्रकारिता की कोई मिसाल नहीं है। हल्द्वानी में छात्रों पर जो लाठीचार्ज किया गया था, उसमें 'अखिल भारतीय प्रगतिशील छात्र मंच' और 'परिवर्तनकामी छात्र संगठन' के सदस्य शामिल थे। आपसे यह उम्मीद नहीं थी कि आप खबर को बिना छानबीन किये छाप देंगे। आशा करता हूं कि आगे बिना छानबीन किये आप खबरें नहीं छापेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

हरीश भोज
कु.वि.वि., डी.एस.बी.
परिसर, नैनीताल

प्रिय साथी हरीश,

बिना छानबीन के खबरों को छापना हमारी पद्धति नहीं है। हमारे संवाददाता साथी के भूलवश यह गलती हो गयी। आपने इस त्रुटि की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया। धन्यवाद। उम्मीद है आगे भी यह सहयोग जारी रहेगा--**सम्पादक**

क्रान्तिकारी संकल्प पर बधाई

31 जनवरी को मैं फरक्का गाड़ी से लखनऊ से वाराणसी जा रहा था। लखनऊ स्टेशन पर कुछ युवक और युवतियां ट्रेन में चढ़े। वे 'आह्वान' पत्रिका लिये देश में बढ़ रही अराजकता और भ्रष्टाचार पर भाषण दे रहे थे।

मैंने एक प्रति 'आह्वान' पत्रिका ले लिया। पत्रिका तो बाद में पढ़ी। पहले मैंने उनसे कहा कि आपका उद्देश्य अच्छा है। जब भी और जहां भी परिवर्तन हुआ है वह क्रान्तिकारी युवकों द्वारा हुआ है। इस लिये आप लोगों ने जो क्रान्तिकारी कदम उठाया है अगर इसे पूर्ण निष्ठा से उठाया गया है तो सफलता आपके कदमों को चूमेगी। मैंने इस संकल्प पर उन्हें बधाई दी।

अगर सचमुच में युवक और युवतियां उठ खड़े हो जाएं तो देश-दुनिया का नक्शा बदल सकता है। एक अच्छे युग का सूत्रपात होगा और एक अच्छा समाज बन सकता है।

बी.एन.श्रीवास्तव
आलमबाग, लखनऊ

आह्वान
एक प्रति छह रुपये
वार्षिक चौबीस रुपये